स्वातंत्र्योत्तर ग्राम केंद्री उपन्यास के रूप में मैला आँचल

डॉ . दिनेशभाई जी .सोलंकी
मददनीश प्राध्यापक हिन्दी
सरकारी विनयन कॉलेज , झगडिया

१.प्रास्ताविक

वैसे तो आँचलिक उपन्यासों की रचना मुख्य रूप से स्वतंत्रता के बाद फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा लिखित उपन्यास 'मैला आँचल' से मानी जाती है | परन्तु आंचलिकता का कुछ अंश तो उनके पूर्ववर्ती उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी दिखाई पड़ता है | प्रेमचंद और उनके समकालीन लेखकों ने उपन्यासों के माध्यम से ग्रामीण जीवन का उदघाटन किया | उन लोगों की अपनी एक विशिष्ट दृष्टि थी | उनका ग्राम्य समाज किसी अंचल विशेष का न होकर संपूर्ण भारत के ग्राम्य समाज का प्रतिनिधि हुआ करता था | उसकी समस्याएँ ग्रामीण भारत की समष्टिगत समस्याएँ थी |

तत्कालीन उपन्यासकारों ने ग्राम्य - समस्याओं का गहन अध्ययन किया था और उन्हीं समस्याओं की यथार्थ प्रस्तुति भी की | स्वतंत्रतता प्राप्ति के बाद एक वर्ग के उपन्यासकार का ध्यान उपेक्षित अंचलों की ओर आकर्षित हुआ | उन्होंने अंचल विशेष के वातावरण, परंपराएं, लोक - कथाएँ, रीति – रिवाज, अंध – विश्वास, बोली – भाषा, रहन-सहन का चित्रण किया | इस प्रकार ग्राम्य - जीवन से समन्वित अनुभूतियों पर आधारित नवीन औपन्यासिक विधा को आँचलिक उपन्यास की संज्ञा से अभिहित किया गया | इन उपन्यासों में लेखक का अंचल विशेष का यथार्थपरक चित्रांकन करना रहा है |

२. आँचलिक उपन्यास का अर्थ

हिन्दी साहित्य कोश में आंचलिक उपन्यास का अर्थ स्पष्ट करते हुए कोशकार ने लिखा है – " कुछ उपन्यासों में किसी प्रदेश विशेष का यथातथ्य और बिम्बात्मक चित्रण प्रधानता प्राप्त कर लेता है और उन्हें प्रादेशिक या आंचलिक उपन्यास कहा जाता है |"१

इस परिभाषा में प्रादेशिक और आंचलिक शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया गया है | जो संदेहात्मक है | हर कोई प्रदेश अंचल नहीं हो सकता भले ही कोई अंचल भौगोलिक या राजनीतिक दृष्टि से प्रदेश भी बन सकता है | इस परिभाषा में आँचलिक तत्वों की चर्चा तक भी नहीं है , अतः यह परिभाषा अपूर्ण और अधूरी है|

आँचलिक उपन्यास की परिभाषा में डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान लिखते हैं – " जिनमें किसी जनपद या प्रदेश के लोक जीवन के लोक - तत्वों का सारवाही समग्र चित्रण हो जिसके माध्यम से उस अंचल विशेष की जनता की बोली, उसके मनोभावों, उसकी लोक – संस्कृति, जीवन के दुःख सुख तथा संघर्षो, जनता के परस्पर

संबंधों, शिष्टाचार, व्यवहार, बच्चों के खेल कूद, स्त्रियों की स्थिति, उनकी विशेषताओं, व्यसन, मनोरंजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, जीवन दृष्टिकोण आदि के रूप सब मुखर हो उठते हैं | दूसरे शब्दों में, पाठक उपन्यास के माध्यम से अंचल विशेष की जनता के जीवन से निकटता प्राप्त कर सकें, वहाँ की जनता के अंतस – बाह्य को पहचान परख सके |"२ इस परिभाषा में सभी प्रकार के क्रिया - कलापों तथा उसके समग्र उद्देश्यों पर प्रकाश डाला है |

३. आंचलिकता की प्रस्तुति

आंचलिकता का सर्वप्रथम प्रयोग फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने सन -१९५४ में 'मैला आँचल' उपन्यास में किया है | लेखक ने पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव को अपने उपन्यास का विषय बनाया था | जिसमें ग्रामीण जीवन का गहन एवं विशद् चित्रण प्रस्तुत किया है | वे ग्रामीण जीवन को चित्रित करते समय उसकी सार्वजनिकता का ध्यान रखते थे | अतः उनके ग्राम भारतीय ग्रामों के प्रतिनिधि के रूप में अभिव्यक्ति पाते रहे | किन्तु 'रेणु' ने अपनी कथा का आधार 'मेरीगंज' गाँव के परिवेश को बनाया | यही मौलिक भेद था | 'रेणु' और उनके पूर्ववर्ती उपन्यासकारों में 'मैला आँचल' में मेरीगंज और परिसर की विविधतापूर्ण छबि अपनी समग्रता में अंकित है | लेखक के शब्दों में ऐसा एक ही गांव है मेरीगंज | रोहतक स्टेशन से सात कोस पूरब बूढी कोसी को पर करके जाना होता है | बूढी कोसी के किनारे - किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूर के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है | इस अंचल के लोग इसे नवाबी 'तडवन्ना' कहते हैं | किस नवाब ने इस ताड़ वन को लगाया था, कहना कठिन है | लेकिन वैशाख से लेकर आषाढ़ तक आस – पास के हलवाहे – चरवाहे इस वन को नवाबी कहते है | " तीन आने लवनी ताड़ी, रोक साला मोटर गाड़ी | अर्थात् ताड़ी के नशे में आदमी मोटर गाड़ी के भी सस्ता समझता है | तडवना के बाद ही एक बड़ा मैदान है, जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगाजी के किनारे खत्म हुआ है | लाखों एकड़ जमीन, बंध्या धरती का विशाल अंचल |"३

'मैला आँचल' बिहार के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार फनीश्वरनाथ 'रेणु' की प्रथम रचना है | मैला आँचल उनकी एक आंचलिक कृति, जिसकी कथावस्तु बिहार के पूर्णिया जिले के अंचल से संबंधित है | बिहार के इस भूभाग को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर रेणुजी ने अपने उपन्यास का कथा – क्षेत्र बनाया है | ग्राम केंद्री उपन्यास के रूप में रेणु जी का मूल्यांकन तथा उसकी महत्ता को प्रतिपादित करते हुए डॉ . शिवकुमार मिश्र लिखते हैं – " रेणु का मूल्यांकन करनेवालों से मेरी गुजारिश है कि उन्हें प्रेमचंद और उनकी परंपरा से अलग करके न देखें | आँचलिक उपन्यासों के प्रवर्तक के रूप में रेणु एक बहुत जल्द चुक जानेवाली परंपरा के प्रथम व्यक्ति बनते हैं , जबकि प्रेमचंद और उनकी परंपरा के संरक्षक और संवर्धक के रूप में वे एक ऐसी परंपरा के प्रथम पंक्ति के रचनाकार के रूप में आते हैं जो जीवित और गतिशील है .....|" ४

उपन्यास के केंद्र बिंदु में समग्र गाँव का जीवन समाहित है | कथा में नायक नहीं है , यदि कोई है भी तो वह डाक्टर ही माना जायेगा | उसके गाँव में आने से कथा का आरंभ होता है और जेल यात्रा से गाँव में फिर लौटने पर कथा का अंत | किन्तु उपन्यासकार की दृष्टि समान रूप से गाँव के सभी प्रतिनिधि पात्रों की ओर गतिशील

है | जमींदार की क्रूरता और उसके मोहक पिता रूप का वर्णन निस्पक्षता से हुआ है | रेणु जी ने जिस ग्राम्य समाज का अंकन किया है वह नि:संदेह पूर्णिया जिले का ग्राम ही है | किन्तु इसके साथ ही वह सांकेतिक अथवा प्रतीकात्मक अर्थ भी ध्वनित करता है | वह अर्थ है – भारत के ग्रामों का विकासशील जीवन | स्थानीय सीमओं के भीतर राष्ट्रीय प्रगति का निर्देशन |

मैला आँचल के नायक डा . प्रशांत के माध्यम से रेणु जी लिखते हैं – " आँसू से भोगी धरती पर प्यार के पौधे लहराएँगे | मैं साधना करूँगा ग्रामवासिनी भारत माता के मैले आँचल तले |"५

'रेणु' जी का दृष्टिकोण स्वच्छ एवं स्वस्थ है | ग्राम - वासियों के आंचलिक जीवन के प्रति अगाध श्रध्दा है – आस्था है | उनका रोमांस यहाँ स्वस्थ है | 'रेणु' जी मूलतः मानवतावादी दृष्टि से परिचालित हैं | गाँव की सभी कुरूपताओं का, गरीबी , अंध –विश्वास , भेदभाव का चित्रण यथार्थ है | भारतमाता और भी जार बेजार हो रही है | नये नये संकट देश और विश्व के सामने आ रहे हैं | साम्राज्यवादी शक्तियाँ मानव रक्त का लोभ संवरण न कर सकने के कारण नये युद्ध की तैयारियाँ कर रही हैं | जिस गहरे अनुभव और भावना से 'रेणु' जी ने अपने परिचित ग्राम्य जीवन को अंकित किया है , वह इस पीढ़ी के लेखकों में अन्यतम है | जिस ग्राम्य जीवन को उन्होंने अंकित किया है वह वैविध्यपूर्ण है और संपूर्ण भी | उपन्यास को पढ़ लेने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक को अपने अंचल का पूर्ण ज्ञान है |

" 'रेणु' जी ने तल्लीन होकर ग्राम जीवन को अपनी कथा में सँजोया हैं | उनके उपन्यास में संपूर्ण ग्राम, उसके प्राकृतिक दृश्य, आर्थिक – सामाजिक जीवन, नर – नारी, चलचित्र की भाँति सजीव होकर हमारे नेत्रों के संमूख घूम जाते हैं | ग्रामीण वातावरण, ग्रामीण मुहावरें, ग्रामीण शब्दावली सब मिलकर एक ऐसा दृश्य उपस्थित करते हैं कि पाठक बरबस कथास्थल की सजीव कल्पना कर लेता है | रेणु जी के विषय में यह कहना अनुचित न होगा कि उन्होंने ग्राम्य जीवन को उसके समग्र रूप और संपूर्ण परिपाश्व में प्रस्तुत किया है | आशय यह है कि 'रेणु' जी ग्राम्य जीवन का अंश या अंग विशेष को किसी उद्देश्य से परिचालित होकर ही प्रस्तुत नहीं करते, वरन उसके यथार्थ रूप को छोटी – छोटी झांकियों के माध्यम से आलेखित करते हैं |" ६

संदर्भ सूची

१. पाठक, कमलाकांत ग्राम्य जीवन के कथा शिल्पी रेणु : पृष्ठ -३०
२. मिश्र, शिवकुमार -प्रेमचंद विरासत का सवाल : पृष्ठ -१२६
३. रेणु, फनीश्वरनाथ 'मैला आँचल': पृष्ठ -२४६
४. रेणु, फनीश्वरनाथ 'मैला आँचल': पृष्ठ - ६
५. वर्मा, धीरेन्द्र हिन्दी साहित्यकोश, संपादक : पृष्ठ -१४
६. सिंह, रामगोपाल 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास': पृष्ठ- ७८